

निरादुपमममं वरुणवमी। कउवठिउकदठमं सुभंठवउ।
नीलपीउडुठमकरुमा ॥ ५ ॥

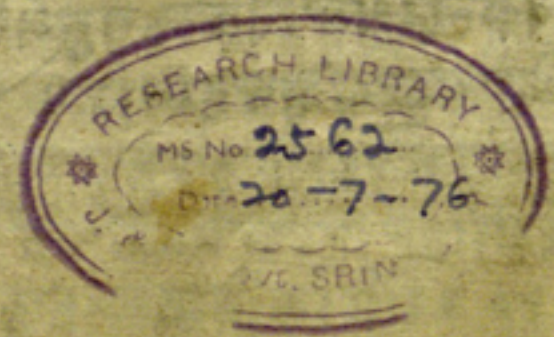
उउमकभिकठभैवहुंमोमउभापयउ। न
हुठिउभुवैपुविमिइठभनेउउ ५ नं
भनभुवैपुविमिइदेउउभियउ। उभुपि
उउवपभुवैमिइकिंनिवउरभा ५ भुमेउ
मवठभेपुउपुववभिउभउि हवठगेकिम
उउवठभेपुपपतिन ५ मिठद्वैवदिमेवैउः
भिकउभिकुवमकुदिः येगीवनिठपमान
भजणउंरुमयउ। १ पुउभनभनुठउप्रवे

सुठभविठुगउप्रउिठिभुदकभुठवः
भमपुठभिकं सुउप्रदकाभिमुदउक
नीलपीउमिउप सुठभः वरुणवमी

भंठिउणकः
भंठिउवभन ॥

नदिनिठउमये
नकठिउवदगः
उठिकिंठन ॥

भउउः भंविमिठठिकदउय सुनपयामुः
भिकुभेवभग यदुनमिंयेगिनभिकुभंठ
पुमिनमिठेमिठविठुलंठुउउपठनंभिकु
भउकुपुउमिठिउमिठेविठुमयनमठवठेव ॥ १ ॥



मिहिरकृतम् ॥ ०३ ॥

[illegible][illegible]

ननु परमार्थे न भविकल्पः भस्मादिकल्पसु कुरु मन्विष्यपुधि
नगरादिकर्षं भूमिदामसु कुरु भविकल्पः ॥ ०० ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

उत्तं कृतिभुजं नमस्कृत्य
श्रुतिं सवत्सवं ० भुजं भुजं
भुजं कृतं यथा ॥ नमः ॥
भुजं कृतं यथा ॥ नमः ॥

ॐ सुगठगवनाङ्गनिर्देविभुः ॥ उत उत मं हनेपभन
 जनेपममिनाहवदर ॥ येरावगिडि यद्गठहउ
 उमपुतापवेतिमभुः ॥ उतः भवदणम ॥ ७ ॥

५७० गीम मिभङ्गले दिमयवुवदगयेग

ਠੇਸ: ਨਿਸ਼ਚਯੁਪਦੁ ।

नरुत्तमिपगभसुठेममभुत्तुत्तुनः ५

पुण्ड्रपद्मं त्रयैस्तु यैव ॥

ॐ भूभुवः स्वः ॥ द्यौः पृथ्वी ॥

मयसङ्गतिः भवति भवतु गेसग

कविउल्लुनभङ्गलृचभावाग्निमहिः

निविकल्पवृत्तवभभये ॥ शृङ्गवभभः ॥ यस्मिन्मृता

महाकुण्डलेष्टुविभक्तः कषभृष

एवमप्युपपद्यते प्रतिभानवलितम्।

अष्टमिहृष्टवभनभङ्गपतिरेकिनी ५

५८ उडियः भुलः मरुः प्रष्टवैभयः प्रष्टवभायमजिः
 यामापरमेष्ठमजिविभन्नपद्मवस्त्रेणुभिह नवसि
 वदेनठति नठकमिमिमिरयवसि वदेनठति ॥ १० ॥

वेदुवेवदिमेमकलवेगः नउवेमकंम, अडिठमलउउगमुगमिद्वेसः ।
 द्वियठमलउउमिरमीपूडभमिउपः कलः उवरुगएमुयभइ
 वलधु, एनमीनंशंमपेयय एनउगपेययमभइभइवठमः ॥३०॥

उमसडिगुद्वेवरभउनडिगुय १० केव

लंठिभवेष्टुमेकलनुरेणतः सुवभ

दुवभायामिभूभंशितभते १०

सुखं विरूपमुद्राणी विउकृतः भाग्यशुभवः ॥

मृदुवभक्षयः शुकमङ्गुषिवगुपः

नरुष्टुविकल्दलदालमभिमडुउविकल्दः॥

नभे विकल्पः भद्रजैव्यक्षणीविनिञ्च

~~५८३६७८९०१२३~~

यः ॥ ठिचयगुठभेदिष्टुएएएए

भविष्यत्पुत्रवृत्ति
लाभप्रदपि ॥

अथैव कुबजिउपम कि
पति उनविकलु उच्च नि
सुउहभउहयदिउह
कवति ॥०॥

५ मृदु ककुं प्रपाद्य पालयति धेनुः । निधेममसि द्याप्यते ॥ ३ ॥

शकमल्लभुपुशुशकमपुशु कर्मिबुभनमेवनाभि उमरुव
कमुपेनं उरुभिउरुवभनपुवनाविकलः ॥ १ ॥

[illegible]

यमिंघवणीधुमुवदिभरुमुनकुडधुपिभधुगल्लापनभवठभनंम
विकल्पधुभममममिउभा प्रभामेवदेउरिममपिभिमिउयःकमिउकी
एव इरुव रीवदियविधुमुमुवठभनकुप विधममिउ नैममिकी
उडि हठनरियलमां भवेवदंरुठिहठयमा ॥ ०० ॥

उवामहठिउकेभुपेनउमेवक मेमकलेडि भुनं एवमं उल्लनमीनंम
भुममपिनं भुपमभनियनभा यउरुमी भमवयः मेमकल मिभिमी
कउरुन धेएनठभनभापयिउं महुनरुषा ॥ ३ ॥

भवतः

यवठिभउभंभनरुभनहुदिगिमे ००

विभजनग

मुतावववठीधुभमल्लापवठभनग ॥

नरियेभुएवविधुभचधुलीविउः ००

मुठवेधुएउयभपपहुउ ३ मेमकलरु

एकवगभा

भमुधभनंभुममपिनभा भरुमुठ

नकमिउ

भुपुमेः

भमएभववृषकःभमवयः ३ ५रुमा

प्रभामेः

उपलभुनंउउठिउंमपगिनभा कदक

गउमिदिदेउउकेभमरु २ भउये

वधुभंविउिःभमंभुमभवे प्रवउ

ठवभरुवेभणनंभवनपगभा ५ वए

ठपकठवेपिभुमनिधुविगणनभा

भउवेउियहुक
भमउविउिउि
उपपहुउ ॥

एकवमनेभच
धुलीवरुउधुव
भुउएकेवगुप
उभमयडि ॥

एवेउिभचधु
कमधुप ॥

भुपमभनंभुममपिनं एकभमंभु
विउ ३ ॥ ३ ॥ भममपिउकेभा ॥ ० ॥

भवेमनं उधितभउिउिभुकलउधेपगउ ॥

यमैधभउिउउउरुभुमभुधित प्र

भनउमिधुपःभमउभमदेवगः ० उउ

दिठिउभंविउिभुपेउकेभमउगि ५उिउिधु

भुइवेपपठिउमजयिउ भवयंउवमुठ उउमिउि उभुवि
ठिउःभंविमनिधुयउपः ५भमनेय भुमुगेउकेभिन
कमिउिभमउउयेठवेधु नीलभापमिधु ५उिउिधु सुठि
भाएनविमउिठराभावेधु पगभरुभमवयउपं एउउय
भपपहपपउउनराभनंभुःभमवयःकममिमीउिठवः ॥ ३ ॥

वउउउवपकंकदकउ ॥ ठवउपंभमवयंउवमुठयउिउरुकोडि भुमुउपमउ
उपठिउंमविममिउ पगभरुविधयनवगदिनं एउउउ भुपनवेमिउभा ॥ ॥
ति वउमिकउ ॥ प्रभामिकदमिउिमिदिदेउ ॥ ॥ ॥ उउउवकलहउविमिउ
मेकंयउमंवेमनंउमेवभमउउमिउि प्रवभपमिउं वेमिउेधमउि भुउरुउठविउि
भउउेपपहुउ ॥ ॥ ॥ भुमिविधयभुमिम भुपेगउउमिउि एउउेयविमउि
यउउेविगिभुठवउ ॥ एकमिभुभउगिविमउेउउः यमदिगउउनंउमिउि एउन मेकउ
भमंवेमनविमउिभुमउउपपहुउकिउिउउकिउिउउकमिउि ॥ ॥

उक्तं सुप्रसन्नं पद्मिनि प्रभुभावं नमभाष्टपदः उक्तं त्रिक
 स्तनं वनगणतुभिदि। स्तनं वनं त्रिषुते नमस्तुतुभा। उक्तं
 प्रसन्नं सुप्रसन्नं पद्मिनि उक्तं ॥ ०३ ॥

॥ ५ ॥
 पुनरुद्गापमभिभक्तुः संनमिभिमिति
 ध्वनवठभा वृणवठभा ह्व उप चुर
 सावअद्वयेपुमी यम विघं ऊचैव ॥

५८४: ५८: ५८: ५८
५८: ५८: ५८: ५८
५८: ५८: ५८: ५८
५८: ५८: ५८: ५८

ॐ दमुपयोगैकनैकयुयिउवल्भुतद्विः भट्टवाणवंभरवृमिधुकलपटउधुवसुभा उगककि
भभुपीठविष्टति उड्डेसकलकरिचः भावय्यभिटकुपञ्जमेहेलेमिमिग्घयेवेधत्रिएमीनउंवे
इच्छयः ॥ ० ॥

भनेनुः क^{०००} भविकूलकपञ्जहु विनं निष्ठाया द्विकं विकल्प कमउ हवभायि
मद्रवामुविमगमेउ विकल्प करिति ॥ ३ ॥

तल्लिगपीडिनकैवलंभसुवमजुनेकमुपउंवल्लिज्ञानक
 उपुगभलक्षेधवक्षुदि ० गभिहृत्तिमल्लाल
 भनहंवल्लिवमज्जमभुत ० भाउपुभुकुभालक्षनहं
 नयडिगवडिदिभित्ठमपधसज्जउहउपेठडि ॥ ५ ॥

9

वहु, ठमऽनु कदह, ठमेन प्रभकटह, ठमेन
 सुव, शठवह, ठमेन, शिमदवसुह, ठमेन मुमि
 गृह, लज्ञरुभसुह, ठालर विगिण्ड, मिशठवठमेन
 दुठिमगिउभदमेद, कम्भसुह, ठा मेव निज्ञीय ॥ ३ ॥
 सकल, भकल, ठउ
 मिउय, यषा, कष, डि
 मधिक, मउ ॥ ७ ॥
 नकेवलं, शठ, ठमेव
 शठ, ठमेव ॥ ७ ॥
 नउय, यगी ॥ ७ ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्रीकृष्णाय नमः ॥
नमस्तस्मै श्रीकृष्णाय नमः ॥ श्रीकृष्णाय नमः ॥

पधपवपुः ॥ २५३ ॥

उत्तमिउप्रवठमभ
नठमयति ॥

उत्तमिउप्रवठमभ
नठमयति ॥

उत्तमिउप्रवठमभ
नठमयति ॥

पधमउत्तमिउप्रवठमभ
नठमयति ॥

ठवनिम्वममेधरिधनिम्वम
नठमयति ॥

एधुधुउत्तममभिः भउयमभउः भउः

कउकमउत्तमकदकग ॥ ३ ॥ यम

भउमभउत्तमभउः भउमभउ ॥ भउदिन

पनः भउलठनउममभउ ॥ ३ ॥ कदकग ॥

उलेकेभउविपगिवतिनः उठयेम्विधवे

मुउउधुकभुपिमभिः ॥ ५ ॥ एवमेकभि

उत्तमिउप्रवठमभ
नठमयति ॥

उत्तमिउप्रवठमभ
नठमयति ॥

यमैधमभउत्तमिउप्रवठमभ
नठमयति ॥

यकमभउत्तमिउप्रवठमभ
नठमयति ॥

वउदंयमउत्तमपेय ॥ ५ ॥ भउपेय

मिउधवीरठउत्तमिउप्रवठमभ
नठमयति ॥

उत्तममभउत्तममभउत्तमिउप्रवठमभ
नठमयति ॥

कभमेकभुरिधमिउ ॥ १ ॥ पउएवउत्तमिउप्रवठमभ
नठमयति ॥

मुनिभिउंपममभउः उठउधुपिरीएमे

देउउनेपपमुउ ॥ ३ ॥ उठदिउभुकभमेव

उत्तमिउप्रवठमभ
नठमयति ॥

उत्तमिउप्रवठमभ
नठमयति ॥

उत्तमिउप्रवठमभ
नठमयति ॥

[illegible]

मिविकुपकदिभुमेत् ॥

संस्कृतः भूमिभूमि
मन्त्रः १७ ॥ १ ॥
पवित्रानि भूमिः ॥ ॥

गंङ्गाय
नमः ॥

॥३॥ भववर्द्धि
भित्तिरुद्धनेन
रुद्धिर्गणितभिः

मदैववृषभय उउरुममिभैकुरइमे

हितीय दिवसम्भ

राजयेन्द्रभा ७ घगिनभधिमन्नीरवि

भामहिन

नैवेद्यमनन्तं परमिष्यते उद्दिष्टं

उद्दिष्टकर्मा ० योगिनिम्नः उद्देशः

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

नियतपेक्षयैव भवेत्तद्वदन्तीति सूत्रम् ॥

ॐ शुभं भवतु ॥ ॐ शुभं भवतु ॥ ॐ शुभं भवतु ॥

मिउठवेउ। पंगिमपुणियउचुमठम

३५वर्ग कर्मभू

मित्रजभा ०१ कदम्बुकिमदधुलिङ्गम

[illegible]

५भाह्वरुवडिनः ॥

प्रभाठमः ॥ प्रभाठममेव ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

उत्तमः वीरभट्टः कवंगीति

पठेः परः ०३ सुभिन्नगीरभभीतिकद

भगवत

करुणायपि य भक्त्युपेक्षा विहीनं न

५भा० नूनमंठवति ।

मन्त्रनयपट्टे ०८ नदिधुक्कनिधुन

भक्तभक्तवलिनाम भक्तभक्तवलिनाम

शुभ्रिज्ञगीति

समस्तमेतन्मन्त्रं पठेत्

मधुशुक्रः शकलदे ०५ प्रगणवविठङ्कः

५भाङ्केकमभाम्भयः श्रियकरकठवापु

उपपद्यते

पुञ्जवभभचयः ७ परभयभुठवडे

कदक ॥ धैभुमकु
वमिनंभते ॥

परकान्त

मृदुहं पद्माक्ष
लीविं भग्नलङ्घनं
उभयैरुत्तमि ॥

धर्ममन्त्रविमर्श
 भक्तुमिदं नृप
 कर्तव्यमिदं ॥

सुभिर्भङ्गीति ॥

मनुषीरुपाद्याविठजेरुहृष्टाभी
वर्धितुक्तः भम, यमि धृतु मिम्ये
ठवश्यं विमृष्टि उमिपकृतं मृष्ट
उनकवकिज ॥ ०५ ॥

कर्मकर्मकर्मकविधये
विनष्टवैव ॥

मुकुटगीर्णयिगि

कदकग...येगपि एकमुमेवठमेदिनैवते

५६कि...नवले... ॥ ५६३३५५३

वृभुपुप ०१ एकमुनेविठमसुशियकल

३४मेवम...शियेमुते।

रुभत्रग उष...मु...उवैवउषपरि...भउ

य ०३ नमपुउं...मु...वैवठमेवि...णः

पुठमठमाकउमिम...नि...पु...उ ०७ व

रा...रा...ठमयेःशिय ॥

भुवेपिमिकडेनभुम...ठमठि...येः मिकी

कलक...कउपगभमंवि...शिय १० ३३उ

षा...ए...प...ह...ठमरागम...न डि...भैगेव

न...उ...व...वि...न...मेव...र...उ...प...मि...भं वि...उ...प...उ...वै...मि...डी
परि...उ...उ...कि...भी...उ...उ...प...रि...क...न...ये...ह...म...ह...र...व...भु...वे...पी
डि...व...भु...वे...मि...क...उ...भ...उ...प...ग...भु...पि...उ...ह...क...उ...ल...क...उ...ठि...व...उ...प...म
भा...वे...म...डि...क...शिय...ने...प...प...उ...उ...प...ग...भ...उ...ल...क...उ...उ...भु...उ...उ...य...मि
ठव...डि...उ...मि...प...प...उ...उ...म...व...प...ग...भ...उ...डि...मि...की...ह...र...प...क...उ...शिय
एक...उ...शिय...भा...उ...भ...प...ग...भ...उ...क...उ...उ...न...ठव...उ... ॥ १० ॥

एउमुपमंनगति उंउवेति डिधुमैः भुउभिस्तेः भुउभु नउ उरुप
भमनभानभुविमिउरुपउमुभैवशियेडिभंवरः भैवमकउरु
उमेवनेउंनउकि...उंनभन...रा...व...ठगव...वि...क...उ...डि...भि...भा १० ॥

भिमुवनेउउकउशिय १० ॥

एवभउउदिचडिः शियकलरुभत्रग

भा...उ...व...उ...म...उ...ह...वि...पु...उ...ए...न...क...म...नी ०

ए...न...उ...प...म...मि...ह...क...व...ठ...म...ने...भ...म...मि...व...रा...भा।

कि...उ...उ...र...म...म...उ...क...उ...म...पु...उ...उ...भ...मि...ः रदि

ठव...प...ग...उ...उ...प...ग...ः प...ग...भ...म...रा...भा १ उं...भैगेव

दि...न...उ...धे...नि...भे...धे...उ...ः भ...म...मि...व...ः भ...म...न...पि

ए...न...शिये...डि...ह...ये...ग...पि...र...व...भे...मे...धे
भ...म...मि...वे...मे...व...ः डि...डी...य...य...उ...ने
ए...वि...ल...भ...डि...भ...ठव...डी...उ...र...ने...भ
उ...डि...भ...न...उ...भ...ल...र...भा ॥ १ ॥

वि...सु...उ...दि...भ...उ...उ...र...उ...र...उ...भ...मे...ध
...नि...भे...ध......उ...उ...उ...उ...प...म...न...भ...न
उ...उ...प...उ...उ...म...न...भा। मु...न...भि...मि...ह
क...भि...उ...पि...क...रा...य...उ...न...उ...उ...डी
मु...उ...वि...ह... ॥ ३ ॥

उ...मु...भ...उ...ग...ए...न...म...डि...वि...पु...उ...उ...मि...डि...उ...भु...
मि...ह...उ...भ...वि...पु...उ...उ...न...शिय...म...ए...न...वि...म...न...भ...मि...
वि...म...न...भ...मि...ह...उ...भ...वि...पु...उ...उ...मि...डि...उ...भु...
व...मु...ः मि...व...उ...भ...मि...ह...उ...ठव...डि ० ॥

शियमउ...उ...उ...
क...व...ठ...म...ने...भ...म...मि...व...रा...भा।
ए...उ...प...म...ग...उं...भु...
उ...उ...भा ॥

उ...मि...डि...उ...भु...उ...ग...ए...न...म...डि...वि...पु...उ...उ...मि...डि...उ...भु...
मि...ह...उ...भ...वि...पु...उ...उ...न...शिय...म...ए...न...वि...म...न...भ...मि...
वि...म...न...भ...मि...ह...उ...भ...वि...पु...उ...उ...मि...डि...उ...भु...
व...मु...ः मि...व...उ...भ...मि...ह...उ...ठव...डि ० ॥

ए...वि...मि...डि...उ...भु...उ...ग...ए...न...म...डि...वि...पु...उ...उ...मि...डि...उ...भु...
मि...ह...उ...भ...वि...पु...उ...उ...न...शिय...म...ए...न...वि...म...न...भ...मि...
वि...म...न...भ...मि...ह...उ...भ...वि...पु...उ...उ...मि...डि...उ...भु...
व...मु...ः मि...व...उ...भ...मि...ह...उ...ठव...डि ० ॥

9

ॐ १ श्रीगुरुपेठारवेषुभक्तकष्टे

ਠਾਕੇਖੁਖਮਾਤਾ

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
नैष्ठिकं कर्तव्यं

येषां मित्रं भवति परमं तेन ह्यनुमितिः शत्रुविमोक्षः
 न ह्यनुपपद्यते शत्रुते परमं सुखं तस्य निमित्तः
 शत्रुतः भवति ह्यनुमितिः ॥ ७ ॥

कद्वलक
मधु ॥

धउरुङ्गः धगुपुगु
 निमिलन विपदयं उरु
 ठयसः ॥ ३ ॥
 उपलानि नृपकमेव ॥ ४ ॥

प्रह्वैवेतिभट्ट, लवेभले द्विप्रकर्तु विवृष्ट
 यदुषेनउभययिः ॥ ३ ॥ भल्लभट्ट भट्ट
 नउत्तेनदिभयीयल्लभल्लयष्टुपि, लट्ट
 युद्धगल्लं कमेदुत्तेवति ॥ ५ ॥

[illegible]

यस्यं भूतं तद्गोपानुमिच्छा प्रयत्नमिदं
परिज्ञेयं पञ्चति उमेव भूतं यथा ठाति भूतं
भाष्यः एवैमिहूतं वरुतः उमेव भूतं भूतं
भूतं ॥ ०३ ॥

अथप्रवृत्तव्यं

भेठवडि ॥ ०३ ॥

(५७) पितृ द्युमदशेक

५॥ मिश्रकभट एव नष्टवश
 लक्ष्मणपदकद्विक ०८ उचमइति
 उचिं मेधुं प्रलयेपमभा भवेदुभय
 वेदुं मभयभलवुतवुतभा ०९ भवेभा
 वहेमियष्टपत्रवृष्टभवेभा न ॥
 उपवेष्टुविषयइति विहभा ॥ भवे
 भवेनवप्रभुं भवेभा ॥ भवेभा ॥
 वरभवेभा ॥ भवेभा ॥ भवेभा ॥
 भवेभा ॥ भवेभा ॥ भवेभा ॥
 भवेभा ॥ भवेभा ॥ भवेभा ॥

देव इयं यं ५७ मेः ५७ वृद्धुत्तु
 ले उद्धनीपमय ५७ यभापमः ॥ यमि
 गतः ०५ ५७ पनमयः ५७ ॥ ५७ के
 भुपुण्णुः उद्धुद्धुममनपुः मे
 धुपुविधुवद्धुव ०७ भट्टेवगाधुम
 नपुधुदगीद्धुद्धुयः विद्धुनक
 लभुद्धुमेवनिविद्धुद्धुकः पनः ५० ॥

यत्तु गच्छतु गच्छ विषयः
मत्तु गच्छतु गच्छ विषयः
पमित्तगः उच्चिषयः मत्तु
एतत्तु गच्छतु गच्छ विषयः ०१ ॥

[illegible][illegible][illegible]

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥

[illegible]

श्रीमद्भक्तमित्रसुखपदसङ्गहः।
 वनगणेशद्वयसङ्गमिदं।
 उभयः।
 भूषि वरुणभक्तमित्रसुखपदसङ्गहः।

मवरनभुमभुनतः भविगुहमभिमिवाहउमदशयभाभि
क्रमयभकलविगदुधयभुवमुजः भावपुगवमकलसुपभम
लनप्रकटनीतः यतावमभुगुनधरयभिमियभजः ॥ सुप्रभयेपम
विमण्डगभमविमभयविमुकगुलमभमदभमनीविठहयहनिम
भविमति। मगीरशुविमुहृहृउमं सुयं मचंवाउरेवनिमझयह विउ

रभाउउं विमुति
परविमुतिपदउं
लठउं ॥ ७० ॥

एतन्मापगउभा
पामितः एवमिति
तैः उरुहृदविमयेः ॥

उहृविगदभाभी
ठवज्ञरुलउिक
यः ॥

१.
५.

उतिप्रकटिउभयभुयटापधमनेनवे
भनगुनठिनमुउभमिवरुधिसभुय
उभउ।
ष उमउनिमण्डमंठवनकगुगभमुने
विठहमिवउभयीभमिमभविममि
मेवउयमिउहृगी मंरधउमिठिः ॥
हृति ७० उभुगुपयमिउरुपनउभ
सुमकिउभेवमविणवगी ॥
हृः भिउप्रुतिकेकउलेकभभनमेवम
मुलभिठनेउमंरुः
परिहृतेनउंयष लेकमुधउषनवे
मिउगुः भदुपिविमुहृरी नैवलं

सुपगभमविमुहृद
विमुकगुहृगुः ॥

एतन्भुयभुमभिमिवाहउमदशयभाभि
एतन्भुयभुमभिमिवाहउमदशयभाभि
भुजभा वयउनमिठिः पगपगुय
लीवउजि विमुतिगुययभाभिमिठि
भनठलहृभुजभा ॥ ७३ ॥

परमेवगिहृदुमयभभीठवाय ॥

उहृ

निरावेठवायउमियंउहृठिहृमिउ
एतन्भुयभुमभिमिवाहउमदशयभाभि
रंभुगुहृठिहृयभदलेनेपयमिउ

७१

७३

वहृभमपमउहृभमगभजः सुप्रियेगभुययउभउः भुमभुज
ठिभउभमलभयं सुनभमुधं भुजभुमकभिरुयेलायिउंभउः ॥
सुप्रभनठिहृयुविठउं यिउमिमुठिउं ठिउंनकिं वसुं प्रउंभिके
ठवाविठि ॥ विनमः मिवाय ॥ ॥

सुष्टुतिर्दिनपुष्टिः पुष्टिर्नवविष्टुः पुष्टिर्नवविष्टुः पुष्टिर्नवविष्टुः ॥ निवः
 शक्यमपुष्टिर्नवविष्टुः ॥ भलः सुष्टु पुष्टिर्नवविष्टुः पुष्टिर्नवविष्टुः
 भयपुष्टिर्नवविष्टुः पुष्टिर्नवविष्टुः पुष्टिर्नवविष्टुः ॥ १० ॥
 शक्यमपुष्टिर्नवविष्टुः ॥ भलः सुष्टु पुष्टिर्नवविष्टुः पुष्टिर्नवविष्टुः

५ श्रीलक्ष्मणः भिः भिः भिः
श्रीलक्ष्मणः भिः भिः भिः
श्रीलक्ष्मणः भिः भिः भिः

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

[illegible]

सुतस्मिन्ः सुतस्य
 मङ्गलः सुतस्य
 मङ्गलः ॥

५६

चिन्मःसिवाय ॥ भद्रमस्तु ॥
 दुःखदुःखलः ० कृतिं प्रगपतु
 कृतिं प्रगपतु १ उक्तं दुःखं
 भद्रमस्तु ॥ ३ ॥
 नमस्तु कृतिं प्रगपतु ३ दुःखदुःखलः
 चिन्मःसिवाय ॥ भद्रमस्तु ॥
 नमस्तु कृतिं प्रगपतु ३ दुःखदुःखलः

नमो भगवते
 नमो भगवते
 नमो भगवते
 नमो भगवते
 नमो भगवते ॥ १० ॥

भारतपुत्र कुंज
गङ्गाधर भट्ट
नीलेश्वर भट्ट
३॥

पराभिप्रायान्नानं
पाद्युष्टं उपभुज्य
भक्त्या भक्त्या इह कृति
वर्कैश्चैव भक्त्या भक्त्या
उपभुज्य भक्त्या भक्त्या
विगवकमयैय
भक्तिभक्त्या भक्ति ॥ ८ ॥

कालीसुगीं धारधरगुरु रूमे लिङ्गवत् । भद्रमभयम्
द्रुक्त्वा भद्रं भवति ॥ १ ॥

वृद्धिभनः लुनेद्विय कद्रुद्विय भयष्टुद्रुम
वल्गुमयेन पम्भन भंविद्वरुने, भनभंवि
दुम्मीनं विक्रमः भनष्टुष्टः ॥ १० ॥

५३

मरुदरुवनल्लुडुभिकष्टपित्तदिभुनिह
 भवुभु यषभधुपेयं यभश्चिद्रूपंरुद्रः
 भुद्रुपेनिहभविदिं उग्रवण्डमैन निहभव
 वृमीलनीयभ ॥ ०३ ॥

नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥

उभूमिदुपमभवगः शुभ्रवधैपलविभिषुरग्न
मिषपमेधनिहंभरवधुधुवति उममुतेपाशुभरवधुधु
धप्रभधुधु रगुदगमभगरुष्टे ॥ ०१ ॥

[illegible]

मृगः भगुं भवकलं यः
 कर्तुं भगुं भवकलं यः
 भिष्टुं भगुं भवकलं यः
 निराभगुं भवकलं यः
 भगुं भवकलं यः ॥ १० ॥

उभयभक्त उभयभक्ति उभयभक्त उभयभक्त उभयभक्त उभयभक्त उभयभक्त उभयभक्त उभयभक्त उभयभक्त
उभयभक्त उभयभक्ति उभयभक्त उभयभक्त उभयभक्त उभयभक्त उभयभक्त उभयभक्त उभयभक्त उभयभक्त
उभयभक्त उभयभक्ति उभयभक्त उभयभक्त उभयभक्त उभयभक्त उभयभक्त उभयभक्त उभयभक्त उभयभक्त
उभयभक्त उभयभक्ति उभयभक्त उभयभक्त उभयभक्त उभयभक्त उभयभक्त उभयभक्त उभयभक्त उभयभक्त
॥ १३ ॥

ॐ नमः शिवाय ॥ १३ ॥

मृतिरूढः प्रहृष्टैर्वकिंकरैर्भीतिवभा
 मना एववायदमंगलैर्भुजैः प्रति
 क्षितः ११ यमवर्धुं भमालधुयमयं
 भमवधुति उमवधुं करिष्टुभिभिभि
 कल्पुतिष्ठति १२ उममिष्टुचभाने
 ममभदवठवपि मीधुष्टुप्रतुभुभि
 उदिष्टवक्रकुंगेमरभा १३ उमउ
 भिन्नफट्टेधिधलीनममिठभुरे मी

उत्तुल्लङ्घितवत्समिन्मध्यमपिध्वजभङ्गः भवद्भङ्गमिवानलेन
 म्रयाध्वजः श्वउत्तुल्लङ्घितवत्समिन्मध्यमपिध्वजभङ्गः भवद्भङ्गमिवानलेन
 नष्टवत्कामिविमेषे ॥ १० ॥

धुपुपमवकुम्भः श्वरः शुभः
 ३: १५ उमा श्वरलम्भः भवः
 वलमालिनः श्वरुपिकगयकर
 नीवमैदिनभा १० उरैवमंशली
 यत्रैमात्रुपानिगल्लनः भद्रगणक
 मित्रेनउत्रैमिवपद्मिः ११ यभ
 कुचमवैलीवः भवठवमभद्रवडा
 उरैवेमनकुपे उरकुपुश्रुतिपतिः १३

उरैभ्रमरुवहेभिनिवृत्तपिङ्गः प्रलीयते
 सप्ततुपभयकलधुरहितः भद्रभाणकमिउरुनेन
 कलत्रमिवभदीलनभ्रुवनेतिमिवद्रुकपष्टुते ॥ ९७ ॥

भवद्भक्त्याय भवद्भक्त्याय भवद्भक्त्याय भवद्भक्त्याय भवद्भक्त्याय भवद्भक्त्याय भवद्भक्त्याय भवद्भक्त्याय
भवद्भक्त्याय भवद्भक्त्याय भवद्भक्त्याय भवद्भक्त्याय भवद्भक्त्याय भवद्भक्त्याय भवद्भक्त्याय भवद्भक्त्याय
भवद्भक्त्याय भवद्भक्त्याय भवद्भक्त्याय भवद्भक्त्याय भवद्भक्त्याय भवद्भक्त्याय भवद्भक्त्याय भवद्भक्त्याय

उभृतुभवभुभुमिष्टगुधमुभेभुमिष्ट
 सुवधिमिष्टमुभुमिष्टगुधमुभेभुमिष्ट
 यंजुनः। वृद्धमुभेभुमिष्टगुधमुभेभुमिष्ट
 दृष्टयिगिनः ॥ १८ ॥

उभिन्नद्वेष्टिश्च सुभितममि
 कश्चैव सुभितवति किञ्च
 मष्टुक्तमष्टप्रमिन्नमष्टम
 नैर्वैदिकिन्ः सुगच्छः
 प्रवर्गवत्तावत्तति ॥ १५ ॥

उत्तमविषयमवच्छेदकेन श्रुत्वा मन्त्रायै मित्रं भुज्ज्वलं
मित्रं श्रुत्वा वदन्ति ॥ ३७ ॥

एवं भूतमेव यस्तु मित्रं यथा भक्त्यमेव रागेऽपि च भिदि
 भक्त्यं ह्रीः शब्देन यस्तु निदुःखं ह्रीः स्मिन्नेव सुखं भुक्तिः
 नदस्तु मीमांसि वस्तु कर्तव्यं ॥ ७० ॥

[illegible][illegible][illegible]

भवमयिनी ३३ यषेच्छुहजिउण
 उरण्णुजिह्मिभित्तन। भैभभदेम
 यंतइभपमयतिमदिनः ३३ उष
 भपेष्टुहीधुज्जुयभुनतिरुभाउ।
 निरुंभुण्णुगंभएभिउविमुंश्कमये
 उ। ३८ पट्टवउधउइधुधुभिभुह
 मकउतः भउंलेकिमभुवण्णु
 प्रपमसुये ३५ यषह्मिभुएरुधः

मृदुषांश्चक्रपञ्चिदुर्वेशतश्चक्रदुर्विशुलमन्त्रनक्रयाभक्षिः
यमउतुंभक्षिश्चक्रवंशभवणमन्त्रग। यमउतुंभवलेकभुरग
सुविश्वप्रवक्रयंमममन्त्रमन्त्रविकल्पः ॥ ३५ ॥

उषश्चपेपुकीधृङ्गनेवपसुति पूययभुनतिरुभमिमिमु
हङ्गयय पुनतिरुभसुह उषष्टेहमये भुङ्गउभतिहकिं
निहं उमेउसुपश्चउतूभिदुसुते, प्रयेमेउभिवर निव्वेसुहङ्गः ॥ ३८ ॥

यथा किल प्रभुः कश्चिन्मनुः प्रकथेत् प्रचं भावणं न पिलशुते
भावनं भुङ्क्ते न च विदुः प्रयत्नविमेषे निरुद्धं भावनं भुङ्क्ते ॥ ३० ॥

भावणनेपिमोतिभि कुयः भृष्टउरिठति
 भवलेष्टुगठविउः ॐ त्वय्यदभजेन
 यमययययभिउभा उय्यवलभउ
 भुनमिगुंभवउते ॐ सुठलीपिउमउ
 भुयउः कदेभवउते सुक्कमयेसुठुका
 मउययिउवकुमिउः ॐ मुनेनः पिधि
 उमेदेययभचल्लुउमयः उययय
 उपिधनकुचरैवंठविधुति ॐ ग्रानिचि

[illegible]

श्री... णं उगपि उल्लभं कलशं भद्रं
 यः कदेव उते, यथा मकुञ्जि मसुके पिष्टाय
 भद्रं भवेन्न भद्रं मज्जि रपि उते, उद्वेगवलेन उषा
 नेन भुक्तवत्मीनं नैव वृत्तं भद्रं भद्रं मयति
 धीति वृत्तं मज्जिः भद्रं यः भवैव भद्रं भद्रं भद्रं
 दक्षं भद्रं भद्रं भद्रं भद्रं भद्रं भद्रं ॥ ३३ ॥

निम्नैर्द्वन्द्वैर्वापि द्विउष्टु
 मगीमचल्लुतामयैश्च उष्टु
 ल्युक्कठल्लमपि द्विउष्टु
 नति, उष्टुश्च द्विउष्टुश्च मच
 इमचल्लुतामयैश्च ॥ ३७ ॥

ग्रानिः किलमिगीगधुविनमिनी भमग्रनिग्लुनमदहते उम्लुनभुमेधे॥
धधुवनेयमिनिट्टिउं उमभजः कर॥ गदिउरुवेउ। धनेनेवकर॥ न

वनीपलितकृतः
मगीरमस्येति
रभा ॥ ५० ॥

लविकमदेउभृच्चलनःभृतिः उ
 उमेधविलभुंज्ञेकुतःभृमदेठक
 एकमितुभृमज्जुयतःभृमपरमयः
 उमेधःभृविज्ञेयःभृयंउभयलक्षये
 उ। २० भृतिविभृतिनमैकुपभृममते
 रमः भृवउतेमिगलेवकीठकउनमेदि
 नः २१ मिमृक्षयेवभवज्जुमहृष्ट
 वतिष्ठते उमकिंवफनैजेनभृयभेवव

॥ कइविधैह पाउ मिअ यउयभमइहवइ
गइह मिइइइउ, भमिउयाः कइभइव भ
इउहः भइअयभवइगिबलइमीयः मिउ
इयउइहपकउयउइयभनः ॥ ८० ॥

मउंभ्रमुमेधमनमीलुभनडिदु
मुलीदुपे नमःराणःमकेदुपम
वृकारमन्नं रसेभुतधूमिभण्ये लउ
भीठकवूनभवउउ प्रमिरलकलेन ॥
॥ ५९ ॥

मिमांसा सूत्रमिच्छा उमवभू भुव
भव भव भव भव भव भव भव भव
उमकिं व भव भव भव भव भव भव
व भव गं भुति भुति ॥ ५३ ॥

ॐ नमः शिवाय ॥ १ ॥
 लोकोत्तमो भवतु ॥ २ ॥
 नमो भगवते ॥ ३ ॥
 वन्द्यो भवतु ॥ ४ ॥
 गङ्गा नमः ॥ ५ ॥
 गङ्गा नमः ॥ ६ ॥
 गङ्गा नमः ॥ ७ ॥
 गङ्गा नमः ॥ ८ ॥
 गङ्गा नमः ॥ ९ ॥
 गङ्गा नमः ॥ १० ॥

五
五

॥ ॐ ॥

यः सदा न वेद न विना शब्दं न च
 भयं न हि कदा मज्जिः मिव धूपमुवति
 नी तद्विशीधुमानः कल्लुगभिद्वूपप
 मिका स उद्गमयत्तुपेभननेवुद्धि
 वतिन पदधुकेन संरुद्धमुद्धुतिर्ये
 नुवभा २७ उद्धुपगवमेठगंडुव
 कुंभरुद्धः संभ/तिश्लयधुधुकर
 लंभंरुद्ध ५० यमरुद्धंरुद्धंरुद्ध

उभयैर्य भुक्तं सदा मीन भवतु यत्पुण्यं भवेत्तु
 वदितुमिति उक्तिः परमं सुभावं यदुष्कृतं वदः उक्तं
 उभयैर्य भुक्तं सदा मीन भवतु यत्पुण्यं भवेत्तु ॥ ८७ ॥

कुङ्कुमवर्णं च ध्यात्वा तैर्गन्धमायः पञ्चभवेन्नृपः उष्ट्रपदकम्
 कवचं भगतिभंगीमरीचं घृतः संभ्राति श्लयश्च राजभारम्
 श्वरुद्रपञ्चसंभारविनाशाय कार्त्तिकेन्द्रसद्भाते वक्राभः ॥ ५७ ॥ ५० ॥

मगधैरुधिरैः ॥ ५७ ॥

भुमउभुलघैमयै नियसुठैरुताभेति
 उउसुठैरुठवेता ५० पुगाणभंसघ
 भैपिभभउतातागिलीभा वरुविमि
 इऊपमंसिइउंगुठठगीभा ५१ रु
 वृभफरुवगिरिभदेसभुपेपमिधुसि
 वभउभिर्वैः भुमभउयसुभगुपुप
 नैःस्रीकल्लभुहुकलीमकार ५३

भू.
रू.

विभुगिरामिन्दारिष्टपसुत्रम्

सुभाषय रायदुल्लभितानम

दिभापरमेश्वरः ० यम्हीतः श्री

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
मय्यरण्यपरमात्मन्यभ्यस्य विष्णु

मन्त्रित्तमः भगवत्पुत्रः

२३ १ प्रभुसिंहजयसमभर

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ममभवभवभिति
महविहमह
प्रकपीहउभाह
कुणवहियमह
निये ।
ममगय ।

श्रीगणेशाय नमः ॥ उल्लभविद्मः कलिलनमयुक्तः सुदुः शुभितः
प्रभउभयः प्रकाममाननागराज्ञवति उभैनमडति मगीगमि
पूनीठवयुक्ता उमेवउंमभाविमाभः ॥ ३ ॥

५॥ वसुधैव कुटुम्बकम् ॥
मतेति श्रुत्वा ॥

कपंतद्वारमेश्वरभा ७ पूरवेचर
 भाउतेपूरवेभरतेपुनः वरुमा
 मपिनैनुष्टुगुत्तयभुलवेनमः १
 वरुमाभवागठितु रठेसुल भित्तं वः
 वरुमागठितु रठेसुल भित्तं वः
 गतः परमेश्वरदंभभुमजिंरंभी
 भिवभुमः ३ निरुपामनभभुम
 भठितुवरुत्तुते रागझिंनभभु
 मैकलसुष्टयमुलिने ७ भय

सुत्रदंमैउउ। सुत्रपाठनमिधयकुभठितिकं सानुमं
मुलीकलवाउमीलडीति ॥ ७ ॥

कमलप्रीतिगुहं श्रीर
मन्त्रं विष्णुः ॥

भट्टा

एलिमगुहगुहविभलीनउभा
मिवल्लनंधुउमगुमेलेदिफरकभनः
धदुभाभीपरिमुमठमयगेधुठमि
ने परभाऊकठवायवल्लियभीठ
वाघउ ०० सुधिपसुभगभीरंगपर
ल्लिउिधठिउः उरुधुउमभंरधु
भउठवठवहुफभा ०१ नभमुहोधि
वेभैभकलकलिउमेर भा नष

००

सुठिभउ
मधि

धुपेपिपसुतिपरभाउरुमयिनभा
ठगवठवठवठवठवठवठवठमिः
धनठवठयमुममकाकभनरैमउ
धवल्लीवंरागत्राषकउहभिमभभु
नः इरुभमइमकगभनभुइनय
भिउिः ०५ माणभमसुविभुलि
वेमगभमयफने नभिनउठलेह
मकलवकायमभुवे ठ वइनः

०३
मठिलधः

०८

मउउमपुगिठिउंभधुपश्रमयठलेउधेदमे ॥

धुपेपिपसुभ
नेभनगभऊप
हुठवापुभभा
नभभुनः धदु
भाभी ॥ ०० ॥

धुव
म

कलत्रविभक्त्यनममह ॥

कयकमलिविनिघेहइधिधे इम

वीकयनिद्रुःकञ्जिद्रुभापिकदि

मिड ०१ रागउभक्तभक्तउडिउ

नियुजिधु पुनटपमभक्तमालिने

मुलिनेनमः ०३ हृतिउगुधेगधु

भापुएधधुप्रलटः नभापिएधउ

एनैःकिभटलधुनैःकलभा ०७

नभैरमःमिवयेतिभक्तभक्तभामि

इन्द्रपुत्रः
नकिउतः ॥

पुत्रपुत्रमकुत
मपिप्रलटमि
नम ॥

भुव
भ०

भक्तनमभयी

समकुतभा

उः स्रष्टुमुसभुवीकुतिभयठेऊं

यउहउः १० कःपकुयननधः

कमवइसुमेयय किंएनयेनन

एयःकिंकिंभियहठे १० मुमि

उयभयंएताधउधितउयभा न

मःभुतःभक्तमुइयिमेठववचउ

भा ११ नभैनिःमेधणीपडिभालल

यभयकुने नषयभुवेमुहंनग

पुत्रपुत्रमभ
चमेवइमयए
उः भः ॥ १० ॥

मगीरभनेवागु
पनेः ॥

वभकि

भुवः स्वर्गः कल्पः भवः कृतः
पञ्चवर्णः सप्तवर्णः ॥

सप्तवर्णः ।

यत्पुत्रीति १३ वृद्धनतिभिर्भु
कर्मभण्डं भवति भुव ठवउउरुमने
नभमः त्रियजं भयि १८ नभंम
यनिः सधप्रुधउरुममकः ५
उहः ५७ भपिधमीयः रुणीभउभा
भगैठीभठवभुणिलयमुः पय
रुभाभा ठक्तिमिनुभलिमवउउः ५
पुनकिंरिउभा १० निगवरुनिदु

भुवः
भः
उभुमिदुवजसु ॥

किंयकुसमिनरिउउठिउउभा
किंयकुठगपवजसिनरिउभा
नभपुभा ॥

१५

मुनिवृत्तल्लुनभंपरुभा सुधीभिकि
नकेष्टुयैरुएनतिप्रलटेः ११
विनुलेपिगुल्लुनल्लुयाकलपट
राः निष्कभपिधरुयः कभननं
परंफलभा १३ मीरुभउलठय
क्रिधयइनकैः भुः उक्कीरिममै
सुदंउवैवभरुणविठे १७ नभैठ
हुनउभहुठवउठवउवउ भुह

सप्तम

पट्टिकपरुभा
नभपिधरुभा
नभ ॥

ठवउवैवभउभुन
यकीरिमै वि
उउउउ ॥ १७ ॥

मैत्रयदवभिउंठैगंरयकुउंउरुः॥

मठवनिभिउभा

मचमवैधं वैम
हुनमहुउंउरुः॥

उरुममउमभवेमभवेठवे ३० भव
लुःभवतद्वचभभीउिल्लनमालिनभा
वेहुंकिंकमवनावनननुयइयय
उ ३० उकुयाएवयधुमंललेकर
यद्वकभा उधुउनचकदंकिवेउि
किचगीगतिः ३१ वृद्धमयीधिरुधु
कममैपानमालय उपदुपरिणवति
ननुंणभनमभउभा ३३ प्रयंरुद्धम

पमुभगीणवरी
डिवकुअमरुधु
इकमउ ॥

भुव.
भ.

उउमउएनहुउधुनपरभराठिः

देमैयंभदममभमविमै उउिमकि
लउयधुधुधिरुधुधुमैठवः ३५
इभनलहउयधुइउउःकरलैगधि
अगैगधियधुउमनमभुंभुमैभद
भा ३५ नमःभुउंभुउंएवेममने
भमनेउषा धुधुमनमकमयमयि
उयकपमिने उ किंभयनेउिभइ
धिभनमपरमैमर भयनइमयेभी

भुउंनमभुल्ल भुउं उमउ ठवने एने उमैकउनरुनिमिउने
ममने उमनउठविनिभाकाकुर भमने उविमै उं ३५ उमैक
हुलाठे पुनरुधुय पाक्रम भुउंउपाय ॥ ३० ॥

धमपुणरुउं
गधि। नलहउ
एवपाभममः।

किमिउिन,
किडिउा ॥

नवउ

डिभभिनङ्गनिकिंभम ३१ मित्रयि
 इकउहकेपीडिउधुमापलउ वि
 मधुठवठवकुमिडुनमैरभेकुसभा
 अमोभिमोडिलेकीयंकलभाइंकषउ
 व सुलषकिंभममैरवृद्रमिठिगधि
 ३७ वसुपाधुमवेडिनठविधु
 मिमयमि कःकैममेववसुलेधुक
 विधुकुणीभुम ५० इमेकमउकेन

३३

कयव'धुय'धु' मधुभीदुपम
 मेनधुमःरियउंभयि ५० नम
 निरुपकदयइलेकेपकगिल
 भवधुभुलनीययनिःभुलयक
 पदिने ५१ धुकेइलउभयंकद
 यभलउभउभा ययनउललठकिं
 वपडिउधुभीधु ५३ भलजीयभदि
 भायउवभयिउयकउः इधुननि

वडिगिउधुपक
रनीयधुठवग ॥

उमभमभयल
 वभिउमिकः॥
 इडिउभेव'नम
 भुइ ॥

धुव.
भ.

विमोडिउधुपक विमोडिउधुपक विमोडिउधुपक
 विमोडिउधुपक विमोडिउधुपक विमोडिउधुपक
 विमोडिउधुपक विमोडिउधुपक विमोडिउधुपक

विमोडिउधुपक विमोडिउधुपक विमोडिउधुपक
 विमोडिउधुपक विमोडिउधुपक विमोडिउधुपक
 विमोडिउधुपक विमोडिउधुपक विमोडिउधुपक

उडुविवेकी

पिलठिभगुल्लकः सुषयते म

पुनः भूठवभचरकुमवाकरा मिवा

विष्णुभक्त्युत्तमकृतकृष्णवर्णः ॥

डिगुलडिपमिभ्यन्नुगुभुंरागइय

भा उद्गुंठवउडुमुकमुसजिःरुपा

सर्वं न मेधमिव केमेधसुभापुं

यः भवभूतः गुणधर्मगुणः क्व

इन्द्रपुंषःभभभित्तः ५१ रगैष्टु

यथा मया तु निरयमं-सु-
 तग-प्रियमिति श्रुत्वा
 दमस्तथा ॥ इति ॥

ॐ-
भ-

विषयदृष्टवानपि यमुं कुरु विमज्जमयः भगुं वा नैव यमु
पमिद्वै गगुमिगुं यजेधि नरु विमज्जमयः भमिधी ॥ ८१ ॥

नमश्चिन्मल्लेश

रागत्रयमभयवैद्यः भिः लेठ

इन्द्रभावमविधाय
याधिनभभुम्भैरुल्लालभुनयमे मः

मिवन्मि३
मूर्ध्निभक्तमिमं कश्चमेव हृदयनक्षकभा

सुवर्णरिभियभिर्त्रभुयैणिरियेउकः

पुनः भवकदं पदः भवकदं

भा उरुचउयस्त्रिभुवैवेमणियःप

उत्तरं । अथान्वयेन कृतं च भवति विमुक्तं
वि ५० यवमुत्तरं भाष्यं भवति भवति

विभुः इन्द्रजिह्वीयधवधनु

भवेत्तु गायत्र्या नमि कदा लुं उक्ता पाठान् म ३३ विम्व
 ५० ॥

वैदिकेष्टेतिष्ठिममिठववमकेकमलिअनभममिठवव
मुष्टिठःइठववमकेकमलिइठववःइठवव
इठववमकेकमलिइठववमकेकमलिइठवव ॥ ५७ ॥

कर्मिल्लिधमसुखं भवं भुविस्त्रिय
वैमिहविभुतिउत्तु ॥

इरुसुते ५० उपमंरुतकभयकभयति
भउत्तु सुवउंभितभयभयभयभयभि
नेनमः ५१ किमसुतः कर्मीतिमचर
नएवधुतः भवत्तुगदिकसक्तिः साक
मीसरलंभम ५२ पुत्तुत्तिभुनिमिधनि
सुधुत्तिमयत्तुनः लहुत्तुवत्तुत्तुत्तुत्तु
पुत्तिनिपिभुव ५३ निमुत्तुत्तिरुपत्तुत्तु
इष्टुत्तुत्तिमत्तिरुत्तु वयवत्तुभदत्तुत्तिम

भुव.
भ -

निरुपत्तुत्तुत्तुत्तुत्तु
कर्मत्तुत्तिभुत्तु ॥

मेदत्तुत्तुत्तुत्तुत्तु
नहत्तुत्तुत्तु ॥

वृद्धमीनभा

ययभययत्तु ५५ पुलिभामि
पुत्तुवत्तिः भवत्तुत्तुत्तुत्तुत्तुत्तु
भीठवत्तुत्तुत्तुत्तुत्तुत्तुत्तुत्तु
ययत्तिजत्तुत्तुत्तुत्तुत्तुत्तुत्तु
भयः उत्तिलत्तुत्तुत्तुत्तुत्तुत्तुत्तु
षकत्तुत्तुभा ५७ नमः भवत्तुत्तुत्तु
भानभैकत्तिवत्तिवत्तुत्तुत्तुत्तुत्तु
इष्टभदत्तुत्तुत्तुत्तुत्तुत्तुत्तुत्तु ५३ हत्तुत्तु

भदत्तुत्तुत्तुत्तुत्तुत्तुत्तु
भगिनिवत्तुत्तुत्तुत्तुत्तुत्तु
निरुत्तुत्तु ॥

पुत्तुत्तुत्तुत्तुत्तुत्तुत्तुत्तु
भविहत्तुत्तुत्तुत्तुत्तुत्तु
हत्तुत्तुत्तुत्तुत्तु ॥ ५० ॥

लत्तुत्तुत्तुत्तुत्तुत्तु
मेदत्तुत्तुत्तुत्तुत्तु

सुत्तुत्तुत्तुत्तुत्तु
विमुत्तुत्तुत्तुत्तु
भयवत्तुत्तुत्तु
वत्तुत्तु ॥

प्राङ्गिकमङ्गलं यथा

उत्तमः उत्तिः प्रधुमेधठवेत्तु इह
मीथिकभेभुनषड्मुक्तिमीथिक ५७
विभधुनेकभस्त्रीरागडुईलेत्तुना
कभा प्रभुवृत्तमभंजुत्तुः कितुः क
विः क्षमः ७० नमः भद्रभङ्गकुभम
इभभवेव प्रभुयः प्रभुयः प्रभुयः
सुदैकमालिने ७० ईलेत्तुप्रयय
वननः कस्मिमीत्तु भविदुदधु

प्रभुयः प्रभुयः प्रभुयः
विनमविठवैगिगीयप्रय ॥ ७० ॥

विष्टभाननंभं
नमविष्टभ
ननं रागनेकु
भा ॥

प्रव.
म.

वर्द्धभभविमभि

उत्तमेवभनुभभगभा ७१ प्र
देष्टमयेण्टवेविभक्तुभक्तु
भा नभेनमः मिवायेतिरापत्तु
मविद्वलः ७२ निष्टभयथिकभा
नभननुनंविणयिने पुनमिद्विथि
सुष्टुईलेत्तुवभभुते ७३ सुभभितु
वनभभुप्रलभनतिभीष्टभा लि
प्रैग्वैथकंकेयतः भंभलपदः ७४

भभलः भवातिमायीण्डः प्रभुयः
प्रभुयः प्रभुयः प्रभुयः ॥

प्रभुयः प्रभुयः
वगना ॥

रागद्विपारादिभक्त्युत्पत्तिः ।

मन्त्रपुत्रकनकुधुर्भेद्यमलिनीत
 उ मन्त्रयभिन्नुभीमतिभयभुभुमः
 मिवभा १० श्रुतवतावेदभुमति
 गठनुर यमिसुपश्रुयतेहैलेहृष्ट
 लघेमये ११ उक्तपियभक्तिमुने
 वंशुद्रुतंपरभा भुक्तपियभेन
 उंयउतुनभेभिर्भेः १३ तपभभु
 गलीतिभिरुधुपकयभिनः ३३

भाक्ताकुटीभि । नक्तपिभुपंगेपधिउं
 मर्केभि ॥

परमेश्वराणां भवभिमंकरं भीतिपिपात्रियभाभा ॥

निधिसुभक्तिकमरावभक्तवरावभक्तवराव
 यक्तुं उभवेभक्त ॥ १३ ॥ मन्त्रयविचयुर्व
 लक्ष्मण ॥ १३ ॥

श्रीकृष्णपिउभविमः ॥
 णवतिगठुष्टेउ
 भाति ॥

भक्तमेवभा

ठक्तिरभापुताणवतिपुल्लिभा
 सुमभुभयुताःभाभुसुतःपराःप
 रभा यधुवेमद्विकल्लयभदेगभीर
 भुमरी १० यधुःश्रुतपदतुविसेधः
 कैमनगवैः भयभक्तनिमेषभाभुभुभु
 पाउवःमिवः १० वैगुभुगतिंपुची
 पुनभुपरभसियभा वैःभुद्रुभुपरां
 केदिंविहृउंइश्रुःश्रु ११ विणिगदि

केदिंविमृतिभा

१७

वैगुमिहृउपभा

केदिंविहृउपभा
 वैगुमिहृउपभा
 वैगुमिहृउपभा
 वैगुमिहृउपभा

वैगुमिहृउपभा

यलउ नदिभुमिहमिपुपेयविणिः कउहउरश्विरुगः सुमिगिडिउमिदि
विणिणउ सुविदिउरुनिधउउउकुलविठवः ॥ १३ ॥

विमिहउठवपरिभुमः

भुमउमिभिविभुपमभेसु पङ्गुभः
^{इवि नैवठवग}
भुमउयभुउमभउउठवग ॥ १३ ॥ नमभे
ठवभभुउरुतिभभुहठिउउ सुनन
^{भउभली उवउ}
भंसनिभुउमवठइ विठवउ ॥ १४ ॥ इ
^{इममगि}
इमिपिठवउरुकभुनमभुभीमिठः
रागकुलुकलुकियभुमिठिउ
^{उकेपिलनडि}
डिकः ॥ १५ ॥ किमउउठिः किमभुठ
दिः भमिठिभुष भवभुनमभेमउ

ठवभभुउयभेसु भुमउयमिठिउमभुपङ्गुभः
भउभली उवउ भुमउयभुउमभउउठवग ॥ १३ ॥
ठवभभुउरुतिभभुहठिउउ सुनन भुमउयभुउमवठइ विठवउ ॥ १४ ॥
इमिपिठवउरुकभुनमभुभीमिठः रागकुलुकलुकियभुमिठिउ
डिकः ॥ १५ ॥ किमउउठिः किमभुठ दिः भमिठिभुष भवभुनमभेमउ

भुव.
मः

इमिपिठवउरुकभुनमभुभीमिठः रागकुलुकलुकियभुमिठिउ
डिकः ॥ १५ ॥ किमउउठिः किमभुठ दिः भमिठिभुष भवभुनमभेमउ

भेदिपुडिगलंभलंभयभयभीमिमिहउठवपरिभुमः भउभली उवउ
भमवेमभकभेइमवेनीठः परभनकउः ॥ १७ ॥

यउहउठवलवउ ॥ १७ ॥ रायतिभेठ
भयमिभलभलननभः सैवय
गवलरुधुमिठिपुपविभुधः ॥ १८ ॥
गयहगीयउयभुपियउराः भेम
^{भउभली उवउ}
कभा मयमपिकभिवः भपियः भ
^{भउभली उवउ}
दवभुठः ॥ १९ ॥ भुभउकिभकभुभपि
^{भउभली उवउ}
भुननः भिउिभा भुभउकिभकभुभपि
^{भउभली उवउ}
इठवः भवकगिभुमि ॥ २० ॥ वभुउउप

भउभली उवउ भुमउयमिठिउमभुपङ्गुभः
भउभली उवउ भुमउयभुउमभउउठवग ॥ १३ ॥
ठवभभुउरुतिभभुहठिउउ सुनन भुमउयभुउमवठइ विठवउ ॥ १४ ॥
इमिपिठवउरुकभुनमभुभीमिठः रागकुलुकलुकियभुमिठिउ
डिकः ॥ १५ ॥ किमउउठिः किमभुठ दिः भमिठिभुष भवभुनमभेमउ

भवभुनमभेमउ भवभुनमभेमउ भवभुनमभेमउ
भविलभुउमभेवभुनमभेमउ ॥ १७ ॥

निरातिरोसिउउमउरियाकरभा॥

मऊनंभवेउरियाकरभा ठवउ

भूमिभभपिभभपदउमिभिमभा

भूममलगासिउभृदृदंभितिभदि

उभा मऊदउउयनषकेभनभूनि

विभितः ३० सधुंभकगीकउंरः

पंभापयिउंउष एकवीरभूतिद

भुंभभभःभभभिधभा ३१ राय

विगीउययभंभगेयःपरभेवरः

३०

भगवती प्रसन्नमनसा
युक्तः केशवविभक्तो नरः
भक्तिरस्यः ॥

भुव.
भ.

मऊनंभवेउरियाकरभा ठवउ
भूमिभभपिभभपदउमिभिमभा
भूममलगासिउभृदृदंभितिभदि
उभा मऊदउउयनषकेभनभूनि
विभितः ३० सधुंभकगीकउंरः
पंभापयिउंउष एकवीरभूतिद
भुंभभभःभभभिधभा ३१ राय
विगीउययभंभगेयःपरभेवरः ॥ ०३ ॥

दुऊनंभवेउरियाकरभा

भगवती प्रसन्नमनसा

यत्रभपिभभपदउमिभिमभा

दुऊनं ३३ ठवनिवठवनेवठवेदुमि

परठव धमजितुदभंभुदइलेकार

भूमंभुतिः ३४ भूतिभभभूनीयेभि

भूतिभुतिः ३५ भूतिभभभूनीयेभि

इदंभुतिः ३६ भूतिभभभूनीयेभि

इदंभुतिः ३७ भूतिभभभूनीयेभि

भूतिभुतिः ३८ भूतिभभभूनीयेभि

भूतिभभभूनीयेभि
भूतिभभभूनीयेभि
भूतिभभभूनीयेभि

भूतिभभभूनीयेभि

भूतिभभभूनीयेभि
भूतिभभभूनीयेभि
भूतिभभभूनीयेभि

३५

३०

भूतिभभभूनीयेभि
भूतिभभभूनीयेभि
भूतिभभभूनीयेभि

पुनर्वा

संज्ञा

महः

उमठङ्गितमगृधुंउमेकभुपयतिभग
 इयिकमललुभनउमैसुदभीमय
 उ। उ। ममःकंनयमंनउंकंमउंम
 भमंनव येमैममयिउमकंमेवमे
 वैवधसराः उउ भयभयभलवृष्ट
 मिहृष्टुनमद्राधः निमलीकगल्लन
 वरुठङ्गिःपरभाल्लनभा उउ निठ
 यंयमुमननभयभेकंयमहयभा

धुव.
ध.

विमृष्टिणभ
 तदिभुपगीपनं
 निमहृभद्रपीठव॥

मामभमपिभवित्रधुंनवाः ।

परमेहृदिभमेवउल्लंउङ्किंशुतीवामे
 पुनेनिमनगभूरीरिथैरःभमभभगरः
 पुनेउरुपयःपरःकेपिभनेवरः
 नमःनउतउउउउहमनभमिने भ
 भुकवभुगल्लययवयुज्जककरिन्
 तिस्रदल्लनवैरगुणमेहृपुपरिभुतिभा
 नवशऊयभननंइमउकपरगतिः
 इष्टुनिष्ठुतिकःसभैसऊःऊल्लयिउंरु

विमृष्टिणभ...
 गङ्गाविलसिगभिण्ड...
 ॥ ७७ ॥

लभा इमिस्तु नगदीउभुवदहृङ्गीप
 गङ्गकः ७८ दहृङ्गीप ७९ भवविहृमनिमक
 निहृमभमउहृमभा ठवहृमभुपेम
 एमएभीयपिप्रलट ७० मिइयहि
 इहृमभिभनैरगगउपिव परमउहृ
 लनषपरिप्रलटभयमुमि ७१ कगुल

पुननलधुगुय ।

पविष्टुष्टुमेध
धरमभका
किंभुमिति ॥

नविचिनयकमकुये ००० निःमेध
क्रमनधुदेकः उतिभमये धभि
मेभीतिनिष्ठितकधुनमरंगः ००
उकुठगवहतिदिहलधुपरम
भा उहमंभममेठउमभेठजिभः
परभा ००३ नवधप्रपियकुदंरुयं
रभप्रभप्रव इमपीनइमये ॥ भ
वरइभिनिचः ००५ ह्येतिधम

मिहप्रपममेठउमभेठजिभः
करीभीतिरंभुमे
मयु ॥
भुः
५०

अदेकुपिहृजीनभा

रकमकभा

मिहकमे

पुननलधुगुय ।
गिति मचयति ॥

पियह्येतिभुइइधुभिणवः मिउ
मुसउमः भुमेभवेवहुइएउराः
भवेइधुपरमः भपिह्येभुमेभुवहु
नि भवेगवभुउयेधुमेविह्येमिभमि
इयभा ००० भिइइइलियैकइ
यधुपइइयधुइ ॥ कवेमठवमुजिः
भुउउउभीइउ ००१ इलिइभिइक
भुउभुउधुनपउपिउः उभेनभेभु

०५

भुउउउउभीइउ ००१ इलिइभिइक
मगीरठवमिह्यनभा लयेठगपभगउधुमउउनंविम
त्रिमनउंकेमिहलंभंउः ॥ ००१ ॥

रिउह्यइइकपिह्येविकपिठेठिकमन ॥

राहुप्रणवरा
पामिनिवृत्ति।

इतिहाः समभनेपरभा
नमभयः ॥

उद्यभुंउत्रिच^{उद्यभुं}भउरुमः ००३ नहिम
पिठवमुक्तिरुहिमफलेमय^{उद्यभुं} निमु
मममुवे^{उद्यभुं}किंफलेतिउद्यभुं
००७ उद्यभुंममयेनभगतिनभुम
यय^{उद्यभुं}कलंउरुमएउयइकषकल
पमपउ। ००० मयभंमयएवउरु
पमिउयिधभिउतिः उरुमयहउय
इभीममरंभम ००० उरुमयउमः

उरुमयभममहिउरु
ममउतिभयभुंभमय ॥

संमभइधि

मचभेवमंभभणमः उरुकलक
लभइनयनवनवयउ ००३ भउरु
रुगविमउभुलेइंकलयमउः कल
यत्रधिकभुकेनिचिकलययउलः
भलउलउभंभगवभनवउिमजिन
इनमीपनमवइंकमउभुभुपभिउः
निभेधभपियइंकमीमधकरिधुभि
पममिउरुममभुकिंनभंभमयिधुभि

कल्पनामः भमपकुविणरु
वेमिइंकलययउरुमययधि ॥

००३
उरुमिउरुमि
उभंभगवभन
मववउिभवमु
ममउतिउरुम
न ॥ ००८ ॥

००५

राहुभाणनप
मामनउरुगी
मुलिउ ॥

मयभुंउत्रिच
मयभुंउत्रिच
कषयिउमउमिउरुः ॥ ००७ ॥

मयभुंउत्रिच
मयभुंउत्रिच
विषय ॥

समस्तः

सचउमयी

रुडिपडिः

पुष्टिभित्तुल्लेभिभनवभ्रीडिठवन
भभऊमय। इमेवपमेश्वरमुलधनंमगंयधुमः॥

ठवेइलधुनउधुयधुमलधुनःप्रठ
विष्णुभायकनैरागडः

००० मुठमुठधुमवधुधुयकडुठवन
इमठमश्वकनः

पि ठवठडिभुरावनीमुठधुवेमकेवल
भवेमने

भा ००१ प्रमवेभनभिधुभिकिंइनिवि

मभकिभ इइवेमइभीमठमिडिमैला

यउएनः ००३ निष्ठयःप्रनगधेइइमठि
भवेमनधु।

धनमेवदि प्रममेभनभःधुभिधुभि

मउधनगयनिष्ठयः यइमठिधुनंधुपगेपनवि भल्लनेन
उकुउमडुमीलनभवेकवलंभनभःभवेमनधुप्रममे नठि
भलपरिपाककमभाधुमिकिडिडि ००७ ॥

रभवेपरिपत्रभलभल्लउकमभाधुवभनभिभमठि किं
नविमभधुमठिधुमं नं नकुठेधुउउइवेम
मकुठिधुनउधुमं नं नकुठेधुउउइवेम
मयेदिडिएनैमलपउभनधु ॥ ००३ ॥

मुठठिपनमितुनपरिभुननमिकदभा

दिभुदगंयमभा ००७ वमझेउमुक

दंसमगीरंभभयइठे इइभमेनउकु
इमयइभवेकं = कुधंयधु

यमुवठवेककुधलभा ०१० भुव

मितुभलिंठुगिभनैरषललधमभा

ठजिलधुललयंमभेठठनगयने

दृणउ ०१० उडिमीभनभफेव

गमदवदठठनगयल्लविगमित

भुवमितुभलिःभभभुः ॥ ॥

कुनींभनैरषनंयठुलंठगवइभवेमललंभनल्ल
उइममडियभुभा भुवभवेमितुभलिं ठजिभयमं नितु
भिवभकुभिंभनभफेवइनधुमिडुठवेनगयल्लपुठठः ॥ ०१० ॥

51

99:

1875

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

1875

1384 1773 35 5 15

1871

**NATIONAL MISSION FOR MANUSCRIPTS
MANUS DATA**

① DSO 00001 8131 ④ DSO 00001 8134
② DSO 00001 8132 ⑤ DSO 00001 8135
③ DSO 00001 8133

8131, 8132, 8133, 8134
8135

Record No.	Organization / Individual
------------	---------------------------

Name of the Institution	Oriental Research Library University Campus, Hazaratbal, Srinagar.	Communication Address	Department of Libraries and Research Municipal Complex, Karanagar, Srinagar.
Personal Collection			

Title of the Text	1. pratyābhijñāṣūtra	Bundle No:..... Acc. No./Manuscript No..... 2562-I-V
Other Title	2. pratyābhijñā bradaya	
Author	Bhattachārāyaṇa Utapaladeva Kallata Ksemarāja	No. of Folios..... 348..... Pages..... 696.....
Commentary	NO	Size of Mss. 16x 24 cm ✓ Material: Paper/palm leaf/birch-bark/cloth/leather/others ✓ Missing portion NO
Commentator	NO	
Language	Sanskrit	Illustrations NO ✓ Complete/Incomplete ✓
Script	Śāradā	Condition: Good/bad/brittle/worm eaten.Fungus/Stuck ✓
Date of Manuscript		Source of Catalogue: Descriptive/Hand list/Alphabetical/Index card ✓
Key words	Darśana	Colour of Manuscripts Cream ✓
Subject	Saivism	Remarks 20 titles Bound of mss - 2062.

3. Vaitulanātha sūtra
4. Spandya Nirṇaya
5. S-tavacin-tāmaṇi

04.05.06